शाश्वत तत्त्व, अनन्त तत्त्व

१ सितम्बर, २०२५

आत्मीय पाठक,

इस वर्ष १ जनवरी को, 'मधुर सरप्राइज़' के दौरान हमारी श्रीगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने हमसे एक प्रश्न पूछा था। गुरुमाई जी ने पूछा, "शाश्वतता और अनन्तता में क्या अन्तर है?"

एक लेखिका होने के नाते, मुझे लगता है कि मेरे लिए यह स्वाभाविक ही था कि मैं अपनी प्रवृत्ति के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए शब्दों के अर्थ का विवेचन करने का दृष्टिकोण अपनाऊँ। मुझे पता था कि *शाश्वतता* शब्द का सम्बन्ध समय से है। शाश्वतता यानी अनन्तकाल, कभी न रुकने वाला समय, ऐसा समय जिसका न आदि है, न अन्त। और *अनन्तता* शब्द का दायरा अधिक विस्तृत है। अनन्तता यानी अपरिमितता, अपारता, ब्रह्माण्डीय असीमितता। यद्यपि *अनन्तता* का सम्बन्ध समय से हो सकता है, तथापि इसका प्रयोग अधिकांशतः स्थान के सन्दर्भ में या किसी चीज़ के परिमाण या उसकी मात्रा अथवा उसकी सीमा या विस्तार को दर्शाने के लिए किया जाता है।

कुछ समय के लिए तो मेरा मन इस उत्तर से सन्तुष्ट हो गया। इन शब्दों के अर्थों के बीच के अन्तर को पहचानकर [या कम-से-कम, उनके बीच के एक मूल अन्तर को पहचानकर], मुझे लगा कि मैंने गुरुमाई जी के प्रश्न का उत्तर भलीभाँति दे दिया है। परन्तु मेरे मन में कुछ अनसुलझा-सा तो अवश्य रह गया होगा, क्योंकि हाल ही में मैं इस प्रश्न पर पुनः विचार करने लगी। मैं सोचने लगी : *गुरुमाई जी ने हमसे यह प्रश्न क्यों पूछा? शाश्वतता और अनन्तता के बीच के अन्तर का विश्लेषण कर हमें क्या समझ मिल सकती है?*

तो मैंने कुछ शोध किया। मैंने अपने वैज्ञानिक पिता से बात की, जिन्होंने मेरे बार-बार पूछे हुए [और निःसन्देह बहुत ही प्राथमिक] प्रश्नों का धैर्यपूर्वक उत्तर दिया। इस प्रक्रिया में मुझे कुछ ऐसी बात समझ में आई जिससे इस पत्र को पढ़ने वाले भौतिकशास्त्री, निश्चित तौर पर भलीभाँति अवगत होंगे। और वह यह कि एक ऐसा परिप्रेक्ष्य, ऐसी परिस्थिति है जिसमें स्थान और समय का भेद समाप्त हो जाता है—जहाँ शाश्वत, अनन्त हो जाता है और अनन्त, शाश्वत हो जाता है।

यह परिप्रेक्ष्य, यह परिस्थिति है, *प्रकाश।*

वैज्ञानिकों ने खोज की है कि प्रकाश की गति में, समय थम जाता है और दूरी सिमटकर शून्य हो जाती है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, रात्रि का आकाश—काले स्फटिक की तरह चमकीला, तारों से भरा आकाश। हमारे ब्रह्माण्ड में सबसे दूर स्थित कुछ तारों से धरती तक प्रकाश पहुँचने में *अरबों* वर्ष लग सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस समय हम उस प्रकाश को अपनी आँखों से देखते हैं, हो सकता है उस समय तक वह तारा अपने स्थान से हट चुका हो या उसका अस्तित्व ही समाप्त हो चुका हो। इसलिए, जब हम आकाश की ओर देखते हैं तो वस्तुतः हम भूतकाल को देख रहे होते हैं।

अब, अगर हम इसी परिदृश्य को *प्रकाश* के दृष्टिकोण से देखें तो? तब वास्तविकता कुछ और ही होगी! बात यह है कि जिस तरह हम समय या दूरी का अनुभव करते हैं, प्रकाश उस तरह नहीं करता। अरबों प्रकाश-वर्ष दूर स्थित तारे से जिस क्षण प्रकाश निकलता है—प्रकाश के दृष्टिकोण से—उसी क्षण वह यहाँ इस पृथ्वी पर *भी* मौजूद होता है और हम उसे अपनी आँखों से देख रहे होते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, प्रकाश समय के अन्तराल को मिटा देता है। प्रकाश स्थानों के बीच की दूरी को समाप्त कर देता है। प्रकाश शाश्वत है। प्रकाश अनन्त है।

मैं किसी भी दृष्टि से भौतिकशास्त्री या गणितज्ञ नहीं हूँ। परन्तु जब मैंने प्रकाश, स्थान और समय के विषय में इन तथ्यों के बारे में जाना, तब मुझे पता चला कि ये मन को भरमाने वाले तो हैं, साथ ही इनमें गहन अन्तर-ज्ञान जगाने की क्षमता भी है। सिद्धयोग पथ पर, हमने गुरुमाई जी से सीखा है कि प्रकाश भगवान का स्वरूप है। हमारा उद्गम प्रकाश से ही हुआ है और हम अन्ततः प्रकाश में ही विलीन हो जाएँगे। प्रकाश ही है जिसे श्रीगुरु हमारे भीतर जगाते हैं; प्रकाश ही है जिसे हम दूसरों में, अपने आस-पास के संसार में पहचानते हैं, मान्यता देते हैं। जब मुझे गुरुमाई जी के दर्शन होते हैं तो प्रकाश ही उमड़कर मेरे हृदय में भर जाता है और प्रकाश ही बाहर छलक पड़ता है। जब मैं स्वप्न में गुरुमाई जी को देखती हूँ तो प्रकाश ही उन स्वप्नों की सीमाओं को पिघला देता है, इसीलिए वे स्वप्न अलग-से लगते हैं, वास्तविक लगते हैं, मानो वे स्वप्नावस्था और जाग्रत अवस्था दोनों के परे हों। इसीलिए अपने अध्ययन और अपने अनुभवों, दोनों के आधार पर मैं समझ गई हूँ कि यदि ऐसा कुछ है जो समय को रोक सकता है—यदि ऐसा कुछ है जो स्थान के पार जा सकता है—तो वह है, प्रकाश।

गुरुमाई जी द्वारा लिखित कविताओं में से मेरी एक मनपसन्द कविता है, "As the Light Comes Streaming Down," जोकि उनकी पुस्तक *Pulsation of Love* [1] [पल्सेशन ऑफ़ लव] से है। इस कविता में, गुरुमाई जी ने प्रकाश और समय के विषयों को एक-दूसरे में गूँथ दिया है और वे हमें प्रेरित

करती हैं कि हम इनके बीच के सम्बन्ध के स्वरूप पर और गहनता से विचार करें। कविता के आरम्भ में गुरुमाई जी लिखती हैं :

जैसे-जैसे प्रकाश झर रहा है,
कल, आज और सदा-सर्वदा,
पवन श्वेत परिधान में सजा है।
नदियों में मानो दूध बह रहा है।
सम्पूर्ण धरा प्रेम की स्निगधता से
प्रफुल्लित हो रही है।
प्रभु की करुणा से भरा,
उनके अनन्त आशीर्वादों से भरा
हृदय भी अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त कर रहा है।

सारा समय भगवान का समय है,
और भगवान का समय शाश्वतता है।
हर जीवात्मा अपनी गहराइयों में यह बात जानती है,
परन्तु जो वह जानती है उसे वह हमेशा याद नहीं रहता।
कृतज्ञता जीवात्मा की प्रकृति ही है।

इस बात का स्मरण न रखने से
कि सारा समय भगवान का समय है,
तुम केवल उसी के लिए कृतज्ञ होते हो
जो अच्छा दृष्टिगोचर होता है।
जब तुम्हारा जन्म होता है तो वह भगवान को धन्यवाद देने का समय है।
जब जीवन चल रहा है तो वह भगवान को धन्यवाद देने का समय है।
जब तुम्हारी मृत्यु होती है तो वह भी भगवान को धन्यवाद देने का समय है।
यह प्रकाश सदैव एक आशीर्वाद है।
यह प्रकाश स्वयं करुणा है।

सारा समय भगवान का समय है। हर क्षण उस तक पहुँचने का द्वार खोल देता है जो विश्वातीत है। गुरुमाई जी यही सिखाती हैं।

तो फिर किस प्रकार हम इस बोध के साथ जीने की निरन्तरता को बनाए रखें? कैसे हम अपना जीवन इस प्रकार जिएँ कि हम भगवान के प्रकाश की ओर बार-बार लौटें? मेरी ऐसी समझ है कि यह प्रश्न, और इससे जुड़े बहुत-से सम्भावित उत्तर, वर्ष २०२५ के लिए गुरुमाई जी के सन्देश के सार में निहित हैं : *अपने समय को अपने लिए लाभप्रद बनाओ।*

इस पूरे वर्ष, मैं सिद्धयोग पथ पर मनाए जाने वाले महोत्सवों के बारे में लिखती आई हूँ और यह भी कि वे स्पष्ट तौर पर हमें भगवान के प्रकाश का अनुभव करने के अवसर प्रदान करते हैं। और सितम्बर माह में यह अवसर है, नवरात्रि। नवरात्रि, उत्सव है नौ रात्रियों का जिसका उद्गम भारत में हुआ; इस वर्ष यह २२ सितम्बर से लेकर ३० सितम्बर के बीच मनाई जाएगी और इसका समापन २ अक्टूबर को दशहरे के उत्सव के साथ होगा। यह महोत्सव देवी भगवती का पूजन-वन्दन करने हेतु समर्पित है जो स्वयं दिव्य प्रकाशरूपिणी हैं। इसके साथ ही, प्रकाश *से* देवी की उपासना करने की परम्परा भी है, उदाहरण के लिए पूजा-अनुष्ठानों द्वारा या गरबा-दीप के चारों ओर नृत्य करके।

निस्सन्देह, हमें भगवान के प्रकाश का आवाहन करने के लिए सितम्बर के अन्त तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। हम अभी, इसी समय ऐसा कर सकते हैं, आज किसी भी समय कर सकते हैं और कल और उसके अगले हर दिन कर सकते हैं। अपनी कविता में, गुरुमाई जी बताती हैं कि हम किस तरह ऐसा कर सकते हैं। हम स्मरण का अभ्यास कर सकते हैं और हम कृतज्ञता का अभ्यास कर सकते हैं।

स्वयं अपने अन्दर, दूसरों में और हमारे आस-पास के संसार में भगवान के प्रकाश की जो अभिव्यक्तियाँ हमारे समक्ष प्रकट हों, हर रोज़ हम उनमें से कुछ की ओर ध्यान देने का प्रयत्न तो कर ही सकते हैं। ज़रूरी नहीं है कि ये अभिव्यक्तियाँ "बड़ी" ही हों। हो सकता है कि हमें इस प्रकाश की झलक एक पत्ती की नसों में मिल जाए या किसी पेड़ की शाखा के झूमने में, किसी की मुस्कान में या किसी के गालों से ढलककर गिरते एक नाजुक-से आँसू में। हमें करना बस यह है कि हम इन क्षणों के प्रति और अधिक सजग हो जाएँ, इनकी ओर ध्यान दें [उदाहरण के लिए, अपने जर्नल में लिखकर] और फिर जागरूकतापूर्वक इनके लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें।

***

मुझे खुशी है कि मैं इस समय कृतज्ञता के बारे में आपसे बात कर रही हूँ। मैं *कृतज्ञ* हूँ कि मैं ऐसा कर रही हूँ। मैं यह क्यों कह रही हूँ?

मैं यह इसलिए कह रही हूँ क्योंकि आज का यह पत्र, सितम्बर का पत्र, अन्तिम पत्र है जो मैं इस वर्ष आपको लिख रही हूँ। और जब मैं पिछले नौ महीनों की हमारी सहयात्रा पर मनन करती हूँ यानी गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश पर जो साधना हमने व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर की है, तब मुझे जो महसूस होता है, वह है कृतज्ञता। मुझे जो अनुभव हो रहा है, वह है, अपने हृदय में उमड़ता हुआ कृतज्ञता का भाव।

मैं गुरुमाई जी के प्रति कृतज्ञ हूँ, उनके नववर्ष-सन्देश के लिए, नववर्ष-सन्देश से जुड़ी उनकी सिखावनियों [जैसे, 'समय के समक्ष'] के लिए, उनके प्रेम व उनकी कृपा के लिए जो इस जीवन में हर समय और हर जन्म में हमारे साथ हैं। मैं आपकी यानी सिद्धयोगियों और नए जिज्ञासुओं के संघम् की भी बहुत सराहना करती हूँ कि आपने मेरे चिन्तन-बिन्दुओं के साथ इतनी विचारशीलता के साथ कार्य किया और गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश के अभ्यास से जुड़े अपने अनुभव साझा किए।

अब, आगे भी, गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश का हमारा अध्ययन और अभ्यास जारी रहेंगे। हमारे पास अब भी इस साल के चार माह बाक़ी हैं, और कौन जाने इस दौरान हमें कौन-कौन-सी अन्तर-समझ मिल जाएँ, कैसे-कैसे अनुभव हों और हममें कैसे रूपान्तरण हो जाएँ? हालाँकि इस साल के बाद भी—कैलेन्डर के इस चक्र के पूरे होने के बाद भी, जिसमें हम गुरुमाई जी के इस सन्देश पर केन्द्रण कर रहे हैं—गुरुमाई जी का ज्ञान जीवन्त रहेगा। उनका यह ज्ञान प्रकाश का ही नादरूप है, प्रकाश ने ही ऐसे विशिष्ट अक्षरों और शब्दों का आकार ले लिया है जिन्हें हम समझ पाते हैं। गुरुमाई जी का नववर्ष-सन्देश शाश्वत और अनन्त है, यह सदा-सर्वदा हमारे साथ है।

इसी विषय की चर्चा को जारी रखते हुए, मैं आपसे पूछना चाहती हूँ : क्या आपने कभी 'सोलर एनालैमा' देखा है या उसके बारे में सुना है? पूरे वर्ष अनेक अलग-अलग दिनों पर, एक ही स्थान से, एक ही समय पर सूर्य की तस्वीरें ली जाती हैं और फिर उन्हें एक-साथ जोड़ दिया जाता है। इससे, बीतते हुए समय के साथ जो आकृति बन सकती है, वह है 'सोलर एनालैमा'। हालाँकि ऐसा लग सकता है कि सूर्य हर तस्वीर में एक ही जगह पर स्थित है, परन्तु वास्तव में वह गतिमान है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर झुकी हुई है [जिसके कारण सूर्य ऊपर-नीचे जाता दिखाई देता है] और पृथ्वी का परिक्रमा-पथ अण्डाकार है [जिसके कारण सूर्य दाहिनी या बाईं ओर जाता दिखाई

देता है]। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि सूर्य की इन सभी तस्वीरों से बनने वाला संयुक्त आकार कैसा होता है?

यह आकार है, अंग्रेज़ी के अंक आठ [8] का जिसे हम *infinity* यानी 'अनन्तता' का चिह्न भी मानते हैं। कैसी समलयता है, है न? मेरे लिए यह एक संकेत है। समयातीतता के पटल पर समय अपनी लीला रचता है। हम जहाँ भी हों या जिस समय में भी हों, अनन्तता की इसी आकृति पर सतत चलते जा रहे हैं।

आदर सहित,
ईशा सरदेसाई

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *Pulsation of Love* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयार्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९०, २००१], पृ. ४७।